Daily Gospel Reflections in Hindi

12 July 2019

मत्ती 13:24-30,36-43

PARABLE OF WEEDS AMONG THE WHEAT

जंगली बीज का दृष्टांत–यह न केवल मुक्ति का इतिहास है, बल्कि यह पूरी दुनियां की कहानी है, आपके और मेरे वजूद के दास्तान है। सुसमाचार पाठ के दूसरे भाग में प्रभु दृष्टांत का व्याख्या भी देते है। इस पूरे ब्रहमाण्ड को, सारी मानव जाति को, सारे जीव–जन्तुओं को प्रभु ने बनाया। और जो कुछ प्रभु ने बनाया वे सब अच्छे थे (Gen 1:18,21,25,31)। अगर सब कुछ ईश्वर ने अच्छा बनाया, तो बुराई, पाप, दर्द, बीमारी आदि कहां से आते है? प्रभु कहते है कि यह तो किसी बैरी का काम है (Mt 13:28)।

यह बैरी कौन है ? उसकी उत्पत्ति कब और कहां हुई ? ईश्वर ने मनुष्य को अपने प्रतिरूप बनाया (Gen 1:27)। उन्होंने मनुष्य को स्वर्गदूतों से कुछ ही छोटा बनाया (Ps. 8:6)। इसके बावजूद ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करके आदि माता–माता ने भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल खाया। (Gen. 3:4-6)। भले और बुरे का ज्ञान अर्जित कर मनुष्य ने बुराई को चुना। जब ईश्वर ने मनुष्य को अपने प्रतिरूप बनाया, ईश्वर ने अपने स्वभाव का एक हिस्सा भी मनुष्य को दिया और वह स्वभाव है आजादी/स्वतंत्रता। ''मसीह ने स्वतंत्र बने रहने के लिए ही हमें स्वतंत्र बनाया'' (Gal. 5:1)।

लेकिन हम उस स्वतंत्रता का गलत उपयोग किया। स्वातंत्र्य का मतलब कुछ भी कहने या करने का अधिकार नहीं है (CCC1740)। आजादी, अच्छाई चुनने के लिए है। ''आप सावधान रहें, नहीं तो यह स्वतंत्रता भोग–विलास का कारण बन जाएगी (Gal 5:13)। अच्छाई करने की स्वतंत्रता से ही बुराई करने का प्रलोभन मिलता है। इसलिए हम बैरी को इधर–उधर न ढूंढे, उसका जड़ हमारे अंदर ही है।

''बुरा ढूढ़न मैं चला, बुरा न मिल्या कोई।

जब अपन की बारी आई, मुझ सा न बुरा कोई।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019